2 यूहन्ना

लेखकः

वही यूहन्ना, जिसने पहला पत्र लिखा था।

समयः

तकरीबन 85 ईस्वी और 95 ईस्वी के बीच।

विषयः

कुछ जानकारों का कहना है कि यूहन्ना एक चर्च को यह पत्र लिख रहा है, लेकिन आदरणीय महिला कह कर सम्बोधित कर रहा है। दूसरे बाईबल शिक्षक कहते हैं कि वह एक मसीही महिला और उसके बच्चों को लिख रहा है। इन दोनों दशा में वह जो कुछ भी लिखता है, उस से हम सीख सकते हैं। मुख्य शब्द हैं - "सच्चाई" और "प्रेम"। झूठे शिक्षकों के बारे में एक गम्भीर चेतावनी 7.11 पदों में है, यदि हम ध्यान दें तो हमारे लिए फ़ायदेमन्द है।

1मुझ प्राचीन के तरफ़ से चुनी हुई महिला
और उसके बच्चों के नाम, जिनसे मैं दिल
से प्रेम करता हूँ, सिर्फ़ मैं ही नहीं, लेकिन
वे भी जिन्होंने सच्चाई को पहचान लिया
है। 2उस सच्चाई के कारण जो हम में वास
करती है और हमेशा हमारे साथ रहेगी,
3उसी की खातिर पिता परमेश्वर के पुत्र
प्रभु यीशु मसीह की कृपा, करूणा और
शान्ति, सत्य और प्रेम में सदैव तुम्हारे
साथ रहेंगे।

4मुझे इस बात की खुशी है कि मैंने तुम्हारे
कुछ बच्चों को उस आज्ञा के अनुसार जो
हमें पिता परमेश्वर से मिली थी सच्चाई
पर चलते पाया। 5अब हे महिला मैं तुम
से बिनती करते हुए कोई नयी आज्ञा नहीं,
केवल वही जो शुरूआत से हमारे पास है,
लिखता हूँ और वह यह कि हम एक दूसरे
से प्रेम रखें। 6प्रेम यह है कि हम यीशु की
आज्ञाओं के अनुसार जियें। यह वही आज्ञा
है जिसे तुम ने शुरू से सुना है और जिस
पर तुम्हें चलना चाहिए।

7क्योंकि दुनिया में बहुत से गुमराह करने
वाले उठ खड़े हुए हैं। वे यह नहीं कबूल
करते हैं कि यीशु देह में इस धरती पर

1:1 "प्राचीन"- यूहन्ना अपने आप को प्रेरित नहीं कहता है (हालाँकि वह था)। दूसरे लोगों के द्वारा प्रेरित, प्राचीन कहलाए जाते थे और कभी-कभी अपने आपको प्राचीन कहा करते थे (1 पतर. 5:1)। यह शब्द बड़ी आयु के साथ-साथ कलीसिया में नेतृत्व या अगुवेपन को दिखाता है।

"चुनी हुई"- मत्ती 24:22,24,31; रोमि. 8:33; इफ़ि.1:4; कुल. 3:11; 1 पतर. 1:1; 2:9 आदि।

"महिला"- यूनानी में "करिया" एक सामान्य नाम था। यूहन्ना एक खास विश्वासी को और उसके बच्चों को लिख रहा था।

"दिल से प्रेम करता हूँ"- उसका प्रेम मानवीय भावना या स्वाभाविक लगाव नहीं किन्तु ईश्वरीय प्रेम था (अगापे - 1 कुरि. 13:1 पर नोट्स देखें)। वह प्रेम सदा सत्य पर आधारित है। यहाँ पर "सत्य" का अर्थ है मसीह का संदेश (यूहन्ना 1:17)। परमेश्वर द्वारा प्रगट किए हुए इस सत्य के प्रति आपसी निष्ठा के कारण विश्वासी एक दूसरे से प्रेम रखते हैं।

1:2 "हमेशा"- यूहन्ना का यह भरोसा था कि जो सत्य विश्वासी के हृदय में बोया गया है, वह अनन्तकाल तक बना रहेगा।

"हमारे साथ रहेगी"- अपने मन में सत्य को स्वीकार करने से कहीं अधिक मसीह में विश्वासी करते हैं। वे अपने हृदयों में सत्य को स्वीकार करते हैं, और सत्य उनके सारे व्यवहार को प्रभावित करता है। भजन 51:6 से तुलना करें। मसीह जो सत्य है, उन में हैं (यूहन्ना 14:6)।

1:3 1 तीमु. 1:2.

"पिता...पुत्र"- यह देखें कि पिता और पुत्र में यूहन्ना किस तरह से भेद करता है। मसीह पिता नहीं हैं। पिता मसीह नहीं हैं। परमेश्वरत्व में वे सदा से दो व्यक्तियों के रूप में रहे हैं। पद 9 भी देखें। पिता, पुत्र और त्रिएकत्व पर मत्ती 3:16-17; 5:16; 28:19; यूहन्ना 3:16; 17:1 में नोट्स देखें।

"कृपा"- दया और शान्ति ऐसी बातें हैं जिनके कारण मसीह जीवन और सेवा संभव है। अनुग्रह परमेश्वर के हृदय का झरना है। दया वह अनुग्रह है जो उण्डेली गयी है। शान्ति इसका परिणाम है।

1:4 "खुशी है"- एक व्यक्ति को आनन्द किस से मिलता है, इस से हम एक व्यक्ति के चरित्र के बारे में जान सकते हैं।

"सच्चाई पर चलते"- परमेश्वर के सत्य पर विश्वास कर के उसे जीवन में लागू कर के। यूहन्ना 8:31-32 से तुलना करें? उस आशा के अनुसार, जो हमें पिता की ओर से मिली थी - व्यव. 5:33; 10:12; 1 राजा 2:3; यशा. 30:21; यिर्म. 6:16 मन बदलने की परमेश्वर की आज्ञा (प्रे.काम 17:30)। सब बुराई, सब झूठ और धोखे को छोड़कर सत्य में चलने की आज्ञा है।

1:5 यूहन्ना 13:34.

1:6 यूहन्ना 14:15,21,23 यदि हम वह नहीं करते जो वह हमें करने के लिए कहते हैं, तो यह कहना बेकार और धोखा है कि हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं।

1:7 "गुमराह करने वाले"- मत्ती 24:4,24; रोमि. 16:18; 2 कुरि. 11:13-15 से तुलना करें। वे धोखा देने वालों के प्रधान की ओर से आते हैं। (प्रका.12:9)।

आए थे। ये ही भरमाने वाले और मसीह विरोधी हैं।

8 अपने बारे में सावधान रहो, ऐसा न हो कि जो मेहनत हम ने की है, उसे तुम गवाँ दो, लेकिन यह कि पूरा प्रतिफल पाओ।

9 जो कोई मसीह की सिखायी बातों से दूर भटक जाता है और उसमें बना नहीं रहता उसके पास परमेश्वर नहीं हैं। लेकिन जो मसीह की सिखायी बातों में बना रहता है, उसके पास पिता और पुत्र दोनों ही हैं।

10 अगर तुम्हारे घर आने वाला इन्सान यही शिक्षा न दे, तो न अपने घर में उसका स्वागत करो और न नमस्कार। 11 क्योंकि जो ऐसे मनुष्य की आवभगत करता है, वह उसके बुरे कामों में हाथ बटाता है।

12 मैं तुम्हें और बहुत कुछ लिखना चाहता हूँ लेकिन कागज़ पर स्याही से नहीं लिखना चाहता हूँ। मेरी ऐसी उम्मीद है कि मैं आमने सामने बात करूँ, ताकि तुम्हारी खुशी पूरी हो जाए

13 तुम्हारी चुनी हुई बहन के बच्चे तुम्हें सलाम कहते हैं।

"देह में"- यूहन्ना 1:14 मसीह एक वास्तविक मानवीय स्वभाव के साथ मनुष्य बने (इब्रा. 2:14,17)। मरों हुओं में से जी उठने के बाद भी मानव स्वभाव उनके पास है और वह इस ही के साथ एक बार फिर आएँगे।

"मसीह विरोधी"- 1 यूहन्ना 2:18,22; 4:3 - मसीह का एक विरोधी, जो मसीह का स्थान लेना चाहता है।

1:8 झूठे शिक्षकों को सुनने और उनके प्रभाव में आने के कारण सच्चे विश्वासी अपना उद्धार नहीं खोएँगे, किन्तु वे और जो कुछ हैं, उसे खो सकते हैं। प्रका. 3:11; 2 तीमु. 2:5; 1 कुरि. 9:27 से तुलना करें।

"पूरा प्रतिफल"- प्रका. 22:12.

1:9 कुछ लोग विश्वास करते हैं कि वे बड़े ज्ञानी हैं और मसीह की सच्चाई को पीछे छोड़ सकते हैं। ऐसे लोग केवल यह दिखाते हैं कि वे बिना परमेश्वर के हैं। 1 यूहन्ना 2:19 से तुलना करें।

"बना रहता है"- यूहन्ना 8:32; 2 तीमु. 3:14 जो लोग सत्य में बने रहते हैं, यह दिखाते हैं कि परमेश्वर उन में हैं।

"पिता...हैं"- पद 3 - यह एक से अधिक व्यक्ति की ओर संकेत है।

1:10 "अगर तुम्हारे घर आने वाला"- उन लोगों के विषय वह कह रहा है, जो मसीह से भिन्न शिक्षा देते हैं। हमें झूठे शिक्षकों का अपने घर में स्वागत नहीं करना चाहिए और न ही कहीं पर उनके साथ सहभागिता करनी चाहिए। हमें उनका अभिवादन तक नहीं रहना चाहिए (2 कुरि. 6:15; रोमि. 11:17 से तुलना करें)। यदि हम ऐसा करते हैं, तो खतरे में हैं और लोगों को ऐसा दिखाते हैं कि उनकी शिक्षा इतनी अधिक हानिकारक नहीं होगी।

1:11 "बुरे कामों"- यही मसीह की शिक्षा के विरोध में सिखाना है। सच पूछें तो मनुष्यों के विरोध में किए गए बुरे कामों में से कुछ हैं। विश्वासियों को इस में कोई हिस्सा नहीं लेना चाहिए, न ही किसी प्रकार का सहयोग करना चाहिए।

1:12 "खुशी"- यह सत्य में सच्ची मसीही संगति का आनन्द है 1 यूहन्ना 1:4 से तुलना करें।

1:13 यह स्पष्ट है कि उसकी बहन एक विश्वासी थी और उसके बच्चे उसी शहर में थे, जहाँ उस समय यूहन्ना था।